

रविवार 2 जून, 2024

विषय — प्राचीन और आधुनिक काला जादू, उपनाम कृत्रिम निद्रावस्था और हाइपोहान

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 7: 9

"भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्म को तू स्थिर कर; क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और मर्म का ज्ञाता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: 1 शमूएल 2: 1-3, 8-10

- ¹ मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा, हुआ है। मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया, क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूं।
- ² यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है॥
- ³ फूलकर अहंकार की ओर बातें मत करो, और अन्धे की बातें तुम्हारे मुंह से न निकलें; क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है, और कामों को तौलने वाला है॥
- ⁸ क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा के हैं, और उसने उन पर जगत को धरा है।
- ⁹ वह अपने भक्तों के पावों को सम्भाले रहेगा, परन्तु दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा॥
- ¹⁰ जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊंचा करेगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. लैव्यवस्था 26: 1 (मैं हूँ), 3, 6 (मैं दूंगा) (सः)

- ¹ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
- ³ यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो,
- ⁶ और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डराने वाला न हो।

2. नीतिवचन 16: 1-3, 6 (सः), 7, 9, 20 (और)

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुंह से कहना यहोवा की ओर से होता है।
- 2 मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है।
- 3 अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी।
- 6 अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है।
- 7 जब किसी का चाल चलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।
- 9 मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।
- 20 ... और जो यहोवा पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है।

3. मलाकी 3: 1 (सं 1st :), 3, 5, 6 (सं:), 10 (और साबित करो), 18

- 1 देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा।
- 3 वह रूपे का ताने वाला और शुद्ध करने वाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे की नाई निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएंगे।
- 5 तब मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा; और टोन्हों, और व्यभिचारियों, और झूठी किरिया खाने वालों के विरुद्ध, और जो मजदूर की मजदूरी को दबाते, और विधवा और अनाथों पर अन्धे करते, और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं मानते, उन सभी के विरुद्ध मैं तुरन्त साक्षी दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥
- 6 क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं।
- 10 ... और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा कर के मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोल कर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।
- 18 तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों को भेद पहिचान सकोगे॥

4. मलाकी 4: 2 (इधार) (सं:)

- 2 ... तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे।

5. मत्ती 3: 1-3, 5-7, 10 (भी)-13, 16, 17

- 1 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा। कि
- 2 मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

- 3 यह वही है जिस की चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो।
- 5 तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए।
- 6 और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।
- 7 जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सद्दूकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो उन से कहा, कि हे सांप के बच्चों तुम्हें किस ने जता दिया, कि आने वाले क्रोध से भागो?
- 10 ... अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।
- 11 मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
- 12 उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं॥
- 13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।
- 16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
- 17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

6. मत्ती 4: 1, 3 (से 2nd), 9 (सभी)-11, 17

- 1 तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।
- 3 तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।
- 9 उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।
- 10 तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।
- 11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥
- 17 उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।

7. मत्ती 15: 30, 31

- 30 और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों, और बहुत औरों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उस के पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया।
- 31 सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

8. लूका 13: 23-25 (सं:), 27, 28 (सं 1st.), 30

- 23 और किसी ने उस से पूछा; हे प्रभु, क्या उद्धार पाने वाले थोड़े हैं?
- 24 उस ने उन से कहा; सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।
- 25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे।
- 27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूं, मैं नहीं जानता तुम कहां से हो, हे कुकर्म करनेवालो, तुम सब मुझ से दूर हो।
- 28 वहां रोना और दांत पीसना होगा।
- 30 और देखो, कितने पिछले हैं वे प्रथम होंगे, और कितने जो प्रथम हैं, वे पिछले होंगे॥

9. 2 पतरस 3: 17, 18

- 17 इसलिये हे प्रियो तुम लोग पहिले ही से इन बातों को जान कर चौकस रहो, ताकि अधमियों के भ्रम में फंस कर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो।
- 18 पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 103: 18-23 (सं 1st.), 29-32

जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में नाम दिया गया है, पशु चुंबकत्व या हिप्रोटिज्म त्रुटि, या नश्वर मन के लिए विशिष्ट शब्द है। यह गलत धारणा है कि मन पदार्थ में है, और यह बुराई और अच्छा दोनों है; यह बुराई उतनी ही वास्तविक है जितनी अच्छी और अधिक शक्तिशाली। इस विश्वास में सत्य का एक गुण नहीं है।

वास्तव में कोई नश्वर मन नहीं है, और परिणामस्वरूप नश्वर विचार और इच्छा-शक्ति का कोई संक्रमण नहीं है। जीवन और अस्तित्व ईश्वर के हैं।

2. 102: 1-8

पशु चुंबकत्व के पास कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, क्योंकि भगवान सभी को नियंत्रित करता है जो वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है, और उनकी शक्ति न तो पशु है और न ही मानव। विज्ञान पशु चुंबकत्व, मेस्मेरिज्म, या हिप्नोटिज्म में एक विश्वास और इस विश्वास जानवर होने का आधार एक नकारात्मकता है, जिसमें न तो बुद्धि, शक्ति, न ही वास्तविकता है, और इस अर्थ में यह तथाकथित नश्वर मन की एक अवास्तविक अवधारणा है।

3. 104: 13-18

क्रिश्चियन साइंस मानसिक क्रिया के तह तक जाता है, और उस थोड़ीसी को प्रकट करता है, जो सभी दिव्य क्रियाओं के सही होने का संकेत देता है, जैसा कि ईश्वरीय मन की मुक्ति है, और इसके विपरीत तथाकथित गलत क्रिया के कारण, — बुराई, मनोगतवाद, काला जादू, मंत्रमुग्धता, पशु चुंबकत्व, सम्मोहन।

4. 192: 4-31

हम वैज्ञानिक हैं, केवल तभी जब हम उस पर अपनी निर्भरता छोड़ देते हैं जो असत्य है और सत्य को समझ लेते हैं। हम तब तक वैज्ञानिक नहीं हैं जब तक हम सब कुछ मसीह पर छोड़ नहीं देते। मानवीय विचार आध्यात्मिक नहीं हैं। वे कान की सुनवाई से, सिद्धांत के बजाय भौतिकता से, और अमर के बजाय नश्वर से आते हैं। आत्मा ईश्वर से अलग नहीं है। आत्मा ईश्वर है।

श्रद्धा शक्ति एक भौतिक विश्वास है, एक अंधा गर्भित बल है, इच्छा की संतान है और ज्ञान की नहीं, नश्वर मन की है और न ही अमर की। यह सिर का लंबा मोतियाबिंद, भयावह लौ, टेम्परेस्ट की सांस है। यह बिजली और तूफान है, यह सब स्वार्थी, दुष्ट, बेईमान और अशुद्ध है।

नैतिक और आध्यात्मिक आत्मा से संबंधित हो सकते हैं, जो "मुट्टी में हवा" रखता है; और यह शिक्षण विज्ञान और सद्भाव के साथ उच्चारण करता है। विज्ञान में, आपके पास भगवान के विपरीत कोई शक्ति नहीं हो सकती है, और शारीरिक इंद्रियों को अपनी झूठी गवाही देनी चाहिए। अच्छे के लिए आपका प्रभाव आपके द्वारा सही पैमाने पर फेंके गए वजन पर निर्भर करता है। आप जो अच्छा करते हैं और अवतार लेते हैं वह आपको एकमात्र शक्ति प्राप्त करने योग्य बनाता है। बुराई शक्ति नहीं है। यह ताकत का मजाक है, जो अपनी कमजोरी को मिटाता है और गिरता है, कभी नहीं उठता।

हम ईश्वरीय तत्वमीमांसा की समझ में अपने गुरु के उदाहरण का अनुसरण करके सत्य और प्रेम के नक्शेकदम पर चलते हैं। ईसाई धर्म सच्ची चिकित्सा का आधार है। जो कुछ भी मानव विचार को निःस्वार्थ प्रेम के अनुरूप रखता है, वह सीधे दैवीय शक्ति प्राप्त करता है।

5. 239: 11-20

दुष्ट व्यक्ति अपने ईमानदार पड़ोसी का शासक नहीं होता। यह समझ लिया जाए कि गलती में सफलता सत्य में हार है। ईसाई विज्ञान का प्रहरी है पवित्रशास्त्र: "दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर।"

अपनी प्रगति का पता लगाने के लिए, हमें सीखना चाहिए कि हमारे संबंध कहां रखे गए हैं और जिन्हें हम स्वीकार करते हैं और भगवान के रूप में मानते हैं। यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, प्रिय, और अधिक वास्तविक होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है।

6. 240: 18-32

जैसे-जैसे समय बीतता है, नश्वर अच्छे या बुरे की ओर आगे बढ़ते हैं। यदि मनुष्य प्रगतिशील नहीं हैं, तो पिछली असफलताएँ तब तक दोहराई जाती रहेंगी जब तक कि सभी गलत कार्य मिटा नहीं दिए जाते या सुधार नहीं लिए जाते। यदि वर्तमान में गलत काम से संतुष्ट हैं तो हमें उससे घृणा करना सीखना चाहिए। यदि वर्तमान में आलस्य से संतुष्ट हैं, तो हमें इससे असंतुष्ट भी होना पड़ेगा। याद रखें कि मानव जाति को देर-सबेर, या तो कष्ट सहकर या विज्ञान द्वारा, उस त्रुटि के प्रति आश्वस्त होना होगा जिसे दूर करना है।

इन्द्रिय भ्रान्तियों को दूर करने के प्रयास में व्यक्ति को पूर्णतया और निष्पक्ष रूप से सबसे अधिक कीमत चुकानी पड़ती है, जब तक कि सभी त्रुटियाँ अंततः सत्य के अधीन न आ जाएँ। पाप की मजदूरी का भुगतान करने की दैवीय पद्धति में किसी के झंझटों को खोलना, और अनुभव से सीखना शामिल है कि कैसे इंद्रिय और आत्मा के बीच विभाजन करना है।

7. 241: 23-5

एक उद्देश्य, विश्वास से परे एक बिंदु, सत्य के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, स्वास्थ्य और पवित्रता का रास्ता। हमें होरेब की ऊँचाई तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए जहाँ परमेश्वर प्रगट होता है; और सभी आध्यात्मिक भवन की आधारशिला पवित्रता है। आत्मा का बपतिस्मा, मांस की सभी अशुद्धियों के शरीर को धोना, यह दर्शाता है कि शुद्ध हृदय ईश्वर को देखता है और आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रदर्शन के करीब पहुंच रहा है।

"ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है" पापपूर्ण विश्वासों के लिए स्वर्ग और शाश्वत सद्भाव के राज्य में प्रवेश करने के लिए। पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।"

8. 254: 19 (वह)-32

... मानव स्वयं को प्रचारित करना चाहिए। यह कार्य ईश्वर हमें आज प्रेमपूर्वक स्वीकार करने के लिए, और इतनी तेजी से व्यावहारिक सामग्री को छोड़ने के लिए, और आध्यात्मिक कार्य करने के लिए कहता है जो बाहरी और वास्तविक को निर्धारित करता है।

यदि आप त्रुटि की शांत सतह पर उद्यम करते हैं और त्रुटि के प्रति सहानुभूति रखते हैं, तो पानी में खलल डालने वाली क्या बात है? त्रुटि का मुखौटा उतारने के लिए क्या है?

यदि आप सत्य के सदैव उत्तेजित लेकिन स्वास्थ्यप्रद जल पर अपनी छाल चलाते हैं, तो आप तूफानों का सामना करेंगे। आपकी अच्छाई की बात बुरी होगी। यह क्रॉस है। इसे उठाओ और सहन करो, क्योंकि इसके माध्यम से तुम जीतते हो और मुकुट पहनते हो। पृथ्वी पर तीर्थयात्री, तेरा घर स्वर्ग है; अजनबी, तुम भगवान के मेहमान हो।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6